हिन्दी अकादमी, हैदराबाद ISSN 2277 - 9264

यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित पत्रिका

संकल्य

शोध और सृजन की त्रैमासिक पत्रिका

अप्रैल - जून, 2024

52 वर्षों से निरंतर
दक्षिण से प्रकाशित

ISSN 2277-9264/यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल RNI No. 25388/74

संकल्य त्रैमासिक

वर्ष : 52 : अंक–2, अप्रैल–जून, 2024

अनुक्रम Contents

संपादकीय

हिंदी साहित्य और भारत बोध : प्रो. आर. एस. सर्राजु 06

आलेख

1. संत साहित्य में गुरु जांभेश्वर जी एवं श्रीमंत शंकर देव की प्रासंगिकता : प्रो. दिनेश कुमार चौबे 07
2. खासी लोक साहित्य के विविध आयाम : प्रो. सुशील कुमार शर्मा 16
3. विश्व व्यापार और हिंदी : प्रो. वर्षा सहदेव 20
4. संत साहित्य के आधुनिक मनीषी : आचार्य नंद किशोर पांडेय : प्रो. अम्बिका ढाका 26
5. मुस्लिमेतर लेखकों की हिंदी कहानियों में चित्रित मुस्लिम समाज (2000–2023) : प्रो. पठान रहीम खान 31
6. जयशंकर प्रसाद के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना : डॉ. वंदना 39
7. मार्कण्डेय की कहानियों में नारी चेतना : डॉ. लेखा पी. 47
8. राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती के साहित्य में भारतीयता : डॉ. शशिप्रभा जैन 50
9. श्रीरामचरितमानस के साथ विस्तार में शाप की भूमिका : डॉ. प्रमोद कुमार मिश्र 57
10. ढलती साँझ का सूरज : किसान अस्मिता और अस्तित्व को बचाने की संघर्ष गाथा : डॉ. रीना सिंह 63
11. हिंदी गज़ल परंपरा और लोकमन का यथार्थ : डालेश शर्मा, डॉ. शशिकांत मिश्र 68
12. नारी जीवन की कारुणिक कथा 'निर्मला' : डॉ.खुदुस ए.पाटील 75
13. साठोत्तरी हिंदी कविता में शिक्षित बेरोजगारों की व्यथा : अखिल चन्द्र कलिता 78
14. उत्तर भारत में घरेलू पर्यटन उद्योग के प्रचार और प्रसार में हिंदी भाषा की भूमिका : डॉ. अखिलेश सिंह, डॉ. अमित कुमार सिंह 83
15. लोक साहित्य परंपरा : एक अवलोकन : डॉ. राजेन सिंह चौहान 91
16. बुनकरों की जीवन दास्तान : झीनी झीनी बीनी चदरिया : डॉ. मेहराजबेगम सैय्यद 96

17. निराला का काव्य : समग्र अनुभव का रूपायन	: डॉ. मनीषा मिश्र	101
18. मणिपुरी कहानियों में स्त्री	: डॉ. लोङ्जम रोमी देवी	108
19. चरण सिंह पथिक की कहानियों में चित्रित लोक जीवन	: बर्णाली खाउण्ड प्रो. सुशील कुमार शर्मा	114
20. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यास–साहित्य का मूल्यांकन	: मेरी आर. ललरिनमुआनपुई प्रो. सुशील कुमार शर्मा	119
21. हिंदी यात्रा वृत्तांत और पूर्वोत्तर समाज	: अश्वनी कुमार गुप्ता प्रो. स्मिता चतुर्वेदी	125
22. अग्निशेखर की रचनाओं में विस्थापन जनित मानवीय वेदना	: गीता शास्त्री डॉ. एस. प्रीति	133
23. 'महाभोज' उपन्यास और सामाजिक समस्याएँ	: गीता रानी (शोधार्थी) डॉ. अनिशा	138
24. सिनेमाई दायरे में अस्मिता की तलाश : थर्ड जेंडर के संदर्भ में	: अभिरामी सी. जे. डॉ. शोभना कोक्कडन	144
25. 'वह लड़की' उपन्यास में चित्रित दलित नारी का अंतर्द्वंद्व	: डॉ. उषा	149
26. स्वयं प्रकाश की कहानियों में युगीन यथार्थ का विश्लेषणात्मक अध्ययन	: मोनी (शोधार्थी)	152
27. आचार्य मम्मट के गुण निरूपा का अध्ययन	: विशाखा बाजपेयी डॉ. रेनू शुक्ला	156
28. हिंदी के 'अलग–अलग वैतरणी' और नेपाली के 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यासों में अभिव्यक्त ग्रामीण शिक्षा व्यवस्था	: टिंकू छेत्री	164
29. हिंदी साहित्य में महिला रचनाकारों की भूमिका	: डॉ. आशा देवी	169
30. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की आधुनिक कालीन इतिहास दृष्टि	: माया (शोधार्थी)	176
31. बिष्णु प्रसाद राभा की रचनाओं में स्वतंत्रता की चेतना	: डॉ. दिनेश साहू	181
32. दलित आलोचक डॉ. धर्मवीर की आलोचना–दृष्टि	: लक्ष्मण	186
33. बिया और बियानाम : असमिया समाज की सांस्कृतिक यथार्थ	: मनसा नेउग	191

34. व्यवस्थित जीवन शैली का आधार पुरुषार्थ चतुष्टय	: चंद्रकांत (शोधार्थी) डॉ. बिशम्बर रंजन	196
35. दलित व्यथा को व्यक्त करती 'घुसपैठिए' संग्रह की कहानियाँ	: अपर्णा भारती	203
36. निर्मल वर्मा के कथा संसार में ईमानदारी और सच्चाई	: प्रो. भारत भूषण डॉ. शशिकांत मिश्र	208
37. अंधेर नगरी : विवेक हीनता और निरंकुश शासन व्यवस्था को खुली चुनौती	: डॉ. गोरख नाथ तिवारी	217
38. उदय प्रकाश की कविताएं और यथार्थबोध	: डॉ. वाइखोम चींखैङानबा	223
39. संस्कृति में लोक पर्व	: ईश्वरी ए.	228
40. हिंदी साहित्य में नाटक का योगदान	: डॉ. पूनम देवी	234

उत्तर भारत में घरेलू पर्यटन उद्योग के प्रचार और प्रसार में हिंदी भाषा की भूमिका

डॉ. अखिलेश सिंह
डॉ. अमित कुमार सिंह

शोध सार : उत्तर भारत में घरेलू पर्यटन उद्योग के प्रचार और प्रसार में हिंदी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। घरेलू पर्यटक अपने ही देश में एक जगह से दूसरी जगह पर कम–से–कम 24 घंटों के लिए यात्रा करते हैं। इसके माध्यम से वे पर्यटन स्थलों के इतिहास और संस्कृति को गहराई से समझ सकते हैं। घरेलू पर्यटन न केवल लोगों को रोजगार के अनेक अवसर प्रदान करता है, बल्कि साथ–ही–साथ राज्यों की अर्थव्यवस्था को सुधारने में भी बहुत सहायता करता है। घरेलू पर्यटन सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को अपनी संस्कृति को संरक्षित और विस्तारित करने का भी अवसर देता है। पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के अनुसार वर्ष 2021 में कुल 67, 76, 32, 981 घरेलू पर्यटकों ने देश के विभिन्न हिस्सों में यात्रा की थी जो वर्ष 2020 के मुकाबले 11 प्रतिशत अधिक थी (पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार 2021)। ज्ञात हो की वर्ष 2020 में 61,02,16,157 घरेलू पर्यटकों ने यात्रा की थी। भारतीय जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार 57.1 प्रतिशत भारतीयों ने माना कि वो हिंदी भाषा जानते हैं। उनमें से 43.63 प्रतिशत भारतीयों ने हिंदी को अपनी मातृभाषा घोषित किया (भारतीय जनगणना, भारत सरकार 2011)। हिंदी भाषा का प्रयोग अधिकतर उत्तर भारतीयों द्वारा किया जाता है। घरेलू पर्यटन के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक लाभ भी प्राप्त होते हैं, जो देश के संपूर्ण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन्हीं कारणों से भारत सरकार, राज्य सरकार और निजी संस्थानों ने अब अंग्रेजी भाषा के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ हिंदी भाषा को भी बढ़ावा देना शुरू कर दिया है ताकि घरेलू पर्यटन को और अधिक बढ़ावा दिया जा सके।

बीज शब्द : उत्तर भारत, घरेलू पर्यटन, हिंदी भाषा, देश, यात्रा, संस्कृति

मूल आलेख : पर्यटन उद्योग अन्य भारतीय उद्योगों में एक सबसे तेजी से बढ़ता हुआ उद्योग है। पर्यटन आज न केवल एक व्यावसायिक उद्योग तक ही सीमित है, बल्कि मनोरंजन के क्षेत्र में भी आकर्षण का केंद्र बना हुआ है (लुओ और लैम 2018)। पर्यटक सामान्यतः अपनी यात्रा के उद्देश्य के दृष्टिगत कम–से–कम 24 घंटों के लिए पर्यटक स्थल पर रुकते हैं और रात्रि में वे किसी होटल, दोस्त या किसी रिश्तेदार के यहाँ ठहरते हैं। यह यात्रा अंतर्राष्ट्रीय या घरेलू हो सकती है (विलियम्स, 2004)। मनोरंजन और छुट्टियों से परे, पर्यटन उद्योग भारत के आर्थिक और सांस्कृतिक ताने–बाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह उद्योग रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जिसमें लाखों लोग होटल, ट्रेवल एजेंसी, रेस्तरां, परिवहन, पर्यटन स्थल, हस्तशिल्प, टूर गाइड व एस्कॉर्ट और अन्य संबंधित क्षेत्रों में कार्यरत हैं

(लार्डिस, 2013)। पर्यटक स्थानीय उत्पादों और सेवाओं पर पैसा खर्च करते हैं, जिससे राजस्व की प्राप्ति होती है, जो अंततः अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है।

घरेलू पर्यटन न केवल हमें मनोरंजन के विभिन्न अवसर प्रदान करता है, बल्कि हमें दूसरे राज्यों के लोगों की संस्कृति को जानने और समझने में भी सहायता करता है। पिछले कुछ वर्षों में, विशेषकर कोरोना महामारी के बाद, भारत में घरेलू पर्यटन के प्रति लोगों की रुचि काफी बढ़ी है (श्यजू, 2024)। पर्यटक मुख्यतः धार्मिक, सांस्कृतिक, खेल–कूद, स्वास्थ्य, चिकित्सा, दोस्तों और रिश्तेदारों से मिलने आदि कारणों से पर्यटक स्थलों की यात्रा करते हैं। इसके अलावा, पर्यटन की गतिविधियों को और बढ़ावा देने के लिए सड़क, रेलवे, हवाई अड्डे, होटल, बिजली, स्वच्छ पेयजल आदि बुनियादी ढांचे में निवेश किया जाता है, जिससे न केवल यात्रा पर गए पर्यटकों को काफी सुविधा होती है बल्कि पर्यटक स्थल का भी समग्र विकास होता है (मैंडिक, 2018)। ग्रामीण इलाकों में ग्रामीण पर्यटन, कृषि पर्यटन, इको–टूरिज्म और होमस्टे बहुत प्रचलित हैं, जिससे स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने में सहायता मिलती है। इस प्रकार के पर्यटन को बढ़ावा देकर स्थानीय निवासियों को अतिरिक्त आय का स्रोत प्रदान किया जाता है, जिससे अंततः ग्रामीण क्षेत्रों की गरीबी को कम करने में बहुत सहायता मिलती है।

पर्यटन सांस्कृतिक दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है। यह ऐतिहासिक स्थलों, प्राचीन इमारतों और कलाकृतियों के संरक्षण को बढ़ावा देता है और भारत की समृद्ध विरासत के प्रसार में सहायता करता है। जब पर्यटक विभिन्न स्थानीय लोगो के संपर्क में आते हैं, तो उनका ज्ञान, समझ और सहिष्णुता बढ़ती है। कई बार यात्रा करने से पर्यटक स्थलों से संबंधित हमारे पूर्वाग्रह भी ठीक हो जाते हैं (कार्बोन, 2017)।

हिंदी, उत्तर भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है और यह स्थानीय लोगों से संपर्क और संवाद करने में भी बहुत मदद करती है। भारत की लगभग 43.63 प्रतिशत जनसंख्या हिंदी भाषा का प्रयोग करती है। इसका मतलब भारत की लगभग 528.3 मिलियन जनसंख्या इस भाषा का प्रयोग अपने दैनिक जीवन में करती है। वैसे तो भारत में 22 आधिकारिक भाषाएँ हैं लेकिन उनमे से सबसे प्रमुख हिंदी भाषा है । हिंदी को देवनागरी लिपि में लिखा जाता है, जिसका प्रयोग संस्कृत, मराठी और नेपाली सहित कई अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी किया जाता है। उत्तरी और मध्य भारत में हिंदी भाषा का महत्व काफी अधिक है और इनमे भी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, दिल्ली, उत्तराखंड, झारखण्ड और हरियाणा के जनमानस में इसका विशेष स्थान है। हिंदी की कई क्षेत्रीय बोलियाँ हैं, जिनमें शब्दावली, उच्चारण और यहाँ तक कि व्याकरण में भी भिन्नता है, लेकिन ये भाषाएँ हिंदी से काफी मिलती जुलती भाषाएँ हैं। जिसके कारण इन्हें समझना काफी आसान है। हिंदी भाषा के महत्ता को देखते हुए कई उत्तर और केंद्रीय भारतीय राज्यों के विद्यालय और कॉलेजों में इसे अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाता है। उत्तर भारत में न केवल दैनिक जीवन में बल्कि पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने में भी इस भाषा का बहुत अहम योगदान रहा है। यह भाषा उत्तर भारत की सांस्कृतिक

विविधता को प्रदर्शित करती है और लोगों को आपस में जोड़ने का काम करती है। हिंदी न केवल उत्तर भारत में बल्कि पाकिस्तान, नेपाल, फिजी, मॉरीशस और दक्षिण अफ्रीका में भी काफी बड़ी संख्या में लोगों के द्वारा बोली जाती है।

हिंदी : भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत की संवाहक : हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक महत्वपूर्ण भाषा है। सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में इसका विश्व में तीसरा स्थान है। पूरी दुनिया में इस भाषा का प्रयोग 528.3 मिलियन लोगों के द्वारा किया जाता है। भारतीय संविधान में देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को संघ सरकार की आधिकारिक भाषा घोषित किया गया है। केन्द्रीय स्तर पर भारत में सह– आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है। हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं बल्कि राजभाषा है, क्योंकि भारत के संविधान में कहीं भी राष्ट्रभाषा का उल्लेख नहीं है (बीबीसी न्यूज 2022)। विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है। हिंदी भाषा में साहित्यकारों ने अनेक उपन्यास, कहानियाँ और कविताएँ लिखी हैं, जिसमें मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा और हरिवंश राय बच्चन जैसे महान कवियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारतीय जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार 57.1 प्रतिशत भारतीय जनसंख्या हिंदी जानती है, यानी कि वह हिंदी बोलना या समझना जानती है। इसमें से 43.63 प्रतिशत भारतीयों ने हिंदी को अपनी मातृभाषा घोषित किया था (भारतीय जनगणना, भारत सरकार 2011)। हिंदी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न स्वरूपों में बोली जाती है, जैसे भोजपुरी, अवधी, ब्रज, राजस्थानी, हरियाणवी आदि, जो सांस्कृतिक और भाषाई विविधता में योगदान देती हैं। इन बोलियों की विविधता हिंदी भाषा की समृद्धता और विविधता को बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त भारत, पाकिस्तान और अन्य पड़ोसी देशों में 14 करोड़ 10 लाख लोगों द्वारा बोली जाने वाली उर्दू भाषा, व्याकरण के आधार पर हिंदी की ही एक बोली है। दोनों ही देशों की जनसंख्या का एक विशाल भाग हिंदी और उर्दू समझता है। हिंदी भारत में सम्पर्क भाषा का कार्य करती है और कुछ हद तक पूरे भारत में सामान्यतः एक सरल रूप में समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी बहुत से राज्यों की राजभाषा है, जिनमे प्रमुख हैं– उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखण्ड आदि। यह भारतीय संस्कृति में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसका प्रभाव संगीत, सिनेमा (बॉलीवुड), कला और दैनिक वार्तालाप में देखने को मिलता है।

वैश्विक भाषा के रूप में महत्वपूर्ण स्थान होने के कारण कई विश्वविद्यालयों में स्नातक और परास्नातक स्तर पर इसका अध्ययन किया जाता है। भारत सरकार हिंदी को विभिन्न योजनाओं द्वारा बढ़ावा देती है, जैसे 14 सितंबर को हिंदी दिवस और 30 मई को हिंदी पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी भाषा को भारत के कई राज्यों के स्कूलों और कॉलेजों में अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। भारत के अलावा कुछ अन्य देशों में भी लोग हिंदी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। फिजी, बांग्लादेश, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम, नेपाल और संयुक्त अरब अमीरात में भी हिंदी या इसकी मान्य बोलियों का उपयोग करने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक है। हिंदी भाषा

का प्रिंट मीडिया, टेलीविजन और डिजिटल मंचों में व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाता है, जिसके कारण आज इसे विश्व भर में एक अलग पहचान मिली है। अगर सोशल मीडिया की बात की जाए तो यूट्यूब के इतिहास में सबसे ज्यादा देखे जाने वाला चैनल टी–सीरीज है, जिसको अब तक 257.06 बिलियन लोग देख चुके हैं। विश्व के 10 सबसे अधिक देखे गए चैनलों में पांच भारतीय चैनल हैं। यू–ट्यूब के अनुसार भारत में 54 प्रतिशत लोग यू–ट्यूब पर हिंदी भाषा में वीडियो देखना पसंद करते हैं। जबकि अंग्रेजी भाषा 16 प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर है (सोशल ब्लेड, 2024)। इसके अलावा इंस्टाग्राम, फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया पर भी हिंदी भाषा में सामग्री की डिमांड बहुत बढ़ी है। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया ने हिंदी की रफ्तार और उपयोग को बहुत बढ़ाया है।

घरेलू पर्यटन की अवधारणा एवं बढ़ती हुई महत्ता : जो पर्यटक अपने ही देश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा करते हैं, वो घरेलू पर्यटक कहलाते हैं और इस प्रकार का पर्यटन घरेलू पर्यटन कहलाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई पर्यटक दिल्ली से तमिलनाडु वहाँ के मंदिरों में दर्शन करने और समुद्र की खूबसूरती को निहारने के लिए यात्रा करता है, तो इस प्रकार की यात्रा घरेलू पर्यटन कहलाती है घरेलू पर्यटन में यात्री पर्यटक स्थल पर कम–से–कम 24 घंटों के लिए ठहरते हैं। यह यात्रा एक शहर से दूसरे शहर, एक जनपद से दूसरे जनपद या एक राज्य से दूसरे राज्य में की जाती है। घरेलू पर्यटक रात्रि में किसी होटल, दोस्त या रिश्तेदार के घर पर ठहरते हैं। घरेलू पर्यटक मुख्यतः अपने दोस्तों या रिश्तेदारों से मिलने, धार्मिक, सांस्कृतिक, खेलकूद व साहसिक प्रतियोगिताओं में भाग लेने या देखने आदि कारणों से यात्रा करना पसंद करते हैं। ऐसे पर्यटकों को यात्रा करने के लिए किसी भी ऐसे दस्तावेजों की जरूरत नहीं होती है, जिनकी अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को जरूरत पड़ती है, उदाहरण के लिए पासपोर्ट, वीजा, मेडिकल सर्टिफिकेट, विदेशी मुद्रा आदि जिनके बिना अंतरराष्ट्रीय पर्यटक अधिकतर देशो में यात्रा नहीं कर सकते (जाफरी, जे. 1987)। इस पर्यटन में यात्रियों को भाषा, संस्कृति, भोजन और समय जैसी समस्याओं का भी सामना नहीं करना पड़ता है। घरेलू पर्यटक बिना किसी रोक– टोक के अपने देश में कहीं भी यात्रा कर सकते हैं। घरेलू पर्यटन आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। यह अर्थव्यवस्था को बहुत मजबूत बनाती है, क्योंकि पर्यटक यात्रा के दौरान आवास, भोजन, परिवहन और मनोरंजन जैसी सेवाओं का उपभोग करते हैं। इस पर्यटन से स्थानीय व्यवसायों को लाभ होता है और लोगों को रोजगार के अनेको अवसर मिलते हैं (कैन, 2020)। इसके अलावा घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने से सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थलों का विकास होता है और साथ–ही–साथ उन्हें संरक्षित करने में भी सहायता मिलती है। सरकार और स्थानीय प्राधिकरण इन स्थलों को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए निवेश करते हैं। घरेलू पर्यटन के माध्यम से लोगों को अपने देश की विविधता को जानने और समझने का अवसर मिलता है, जो राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देता है। इस प्रकार के पर्यटन से देशवासियों में आपसी समझ और

सदभावना बढ़ती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि घरेलू पर्यटन न केवल मनोरंजन और ज्ञानवर्धन का स्रोत है, बल्कि साथ ही साथ राष्ट्रीय एकता, अखंडता और सोहार्द का भी प्रतीक है।

भारत में भ्रमण करने वाले घरेलू पर्यटकों की सिंहावलोकन : पर्यटन मंत्रालय संबंधित राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों से प्राप्त जानकारी के आधार पर विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) में आने वाले घरेलू पर्यटकों की संख्या संकलित करता है। घरेलू पर्यटन के आंकड़ों का संकलन राज्य सरकारों व केंद्र शासित प्रदेशों के पर्यटन विभागों में सांख्यिकी प्रकोष्ठों द्वारा किया जाता है। ये आँकड़े आम तौर पर होटलों और अन्य आवास प्रतिष्ठानों से एकत्र मासिक रिटर्न पर आधारित होते हैं। अखिल भारतीय रुझानों और आकड़ों का भी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में घरेलू और विदेशी पर्यटकों की यात्राओं का अनुमान लगाने के लिए उचित रूप से उपयोग किया गया है।

घरेलू पर्यटकों की यात्राओं में निरंतर वृद्धि हुई है। 1991 से 2021 तक सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में घरेलू पर्यटकों की यात्रा की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) 7.8 प्रतिशत रही है। वर्ष 2021 में वर्ष 2020 की तुलना में घरेलू पर्यटकों की यात्राओं में 11.05 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, जबकि विदेशी पर्यटकों की यात्राओं में 2020 की तुलना में –85.29 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। 2009 से 2019 के दौरान राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में घरेलू पर्यटकों की संख्या में वृद्धि का रुझान दर्ज किया गया है। वर्ष 2020 और 2021 में घरेलू पर्यटक यात्राओं में क्रमशः –73.72 प्रतिशत और 11.05 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई (पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार 2021)।

घरेलू पर्यटन उद्योग के विकास में हिंदी भाषा की उभरती व्यापकता एवं आकर्षण : घरेलू पर्यटन के विकास में हिंदी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत में हिंदी सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है, जिसे देश के अधिकांश हिस्सों में समझा और बोला जाता है। यह पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी प्रदान करने, मार्गदर्शन और संचार को आसान बनाने में सहायक होती है।

हिंदी भाषा का उपयोग पर्यटन स्थलों के साइनबोर्ड, दिशा–निर्देश, और सूचना पुस्तिकाओं में करने से पर्यटकों को स्थानीय परिवेश और संस्कृति को समझने में सुविधा होती है। इसके अलावा हिंदी भाषा में उपलब्ध साहित्य, यात्रा वृतांत, और ऑनलाइन सामग्री पर्यटकों को आकर्षित करती है और उन्हें विभिन्न स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त करने में मदद करती है।

स्थानीय गाइड और पर्यटन व्यावसायियों के लिए हिंदी में प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन भी महत्वपूर्ण है। इससे वे घरेलू पर्यटकों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं, जो हिंदी सीखने की कोशिश कर रहे होते हैं, साथ ही वे घरेलू पर्यटकों को बेहतर सेवा प्रदान कर सकते हैं। सिनेमा, साहित्य और मीडिया में हिंदी की व्यापक पहुँच भी घरेलू पर्यटन को प्रोत्साहित करती है। फिल्में और टेलीविजन शो, जो विभिन्न पर्यटन स्थलों को दर्शाते हैं, दर्शकों में इन स्थलों के प्रति रुचि और आकर्षण पैदा करते हैं (नंजनगुड, 2020)। इस प्रकार, हिंदी भाषा घरेलू पर्यटन के विकास में एक महत्वपूर्ण

साधन है, जो न केवल संचार और जानकारी का माध्यम है, बल्कि सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में भी योगदान देती है।

सरकारी और निजी प्रयास : विगत वर्षों में, पर्यटकों की अपेक्षा के दृष्टिगत पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पर्यटन स्थल सम्बंधित आवश्यक सूचनाओं को हिंदी भाषा में उपलब्ध कराया जा रहा है, जिससे पर्यटकों को पर्यटन स्थल की संपूर्ण जानकारी प्राप्त करना अति सुगम एवं सरल हो गया है। इस क्रम में भारतीय पर्यटकों की एक बड़ी संख्या का रेल मार्ग से यात्रा तय किए जाने के दृष्टिगत उन्हें सरल हिंदी भाषा में टिकट बुकिंग एवं यात्रा से सम्बंधित अन्य सभी प्रकार की आवश्यक जानकारियाँ मुहैया करवाई जा रही हैं। इससे पर्यटक यात्रा हेतु अधिकाधिक उत्साहित एवं प्रेरित हो रहे हैं (राजशेखरन 2014)। इतना ही नहीं, राज्य सरकारों द्वारा भी पर्यटन के क्षेत्र में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने हेतु, समय–समय पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं पर्यटन मेलों का आयोजन अलग–अलग स्थानों पर किया जा रहा है। भावी पीढ़ी एवं युवा पर्यटकों को लुभाने तथा उन्हें हिंदी भाषी क्षेत्रों में सुगमता से पर्यटन व्यवसाय कार्य को संपादित करने हेतु आज विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में पर्यटन शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रमों को हिंदी भाषा में तैयार किया जा रहा है जो कि सरकार का एक अति सराहनीय कदम है (पर्यटन मंत्रालय)।

उक्त के अतिरिकित, निजी क्षेत्रों के द्वारा भी घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिंदी भाषा को काफी महत्व दिया जा रहा है। इसलिए आजकल सभी ट्रेवल एजेंसी, होटल व उड्डयन कंपनियां अपने कर्मचारियों को हिंदी भाषा में लिखने व बोलने की ट्रेनिंग दे रही है, जिससे वो पर्यटकों से उनकी मातृभाषा में बातचीत कर सके और उन्हें सेवाएँ दे सके। पिछले कुछ वर्षो में धार्मिक पर्यटन काफी तीव्र गति से बढ़ा है। उदाहरण के लिए अयोध्या में प्रतिदिन लगभग 1.5 से 2 लाख तो वहीं वाराणसी में 1 लाख तक धार्मिक पर्यटक यात्रा करने पहुँचते हैं। धार्मिक पर्यटकों में अधिकांश वह वर्ग होता है जो ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बन्ध रखता है और अपनी मातृभाषा को ही अच्छे से जानता और समझता है। बहुत से होटल, रेस्टोरेंट व परिवहन कंपनियों ने अपने यहाँ हिंदी में संकेत चिन्हों का प्रयोग करना शुरू कर दिया है। ताकि हिंदी भाषा जानने वाले पर्यटकों को सहूलियत हो सके। आजकल ट्रैवल एजेंसियां ऐसे धार्मिक व सांस्कृतिक यात्राओं को बढ़ावा दे रही है, जिसमें यात्रिओं के साथ ऐसे अनुभवी टूर गाइड व टूर एस्कॉर्ट यात्रा करते हैं, जिनकी हिंदी की समझ अच्छी होती है। इसके आलावा होटल व रिसोर्ट हिंदी भाषा में सांस्कृतिक कार्यक्रमों को आयोजित कर रहे है जिससे घरेलू पर्यटकों को और अधिक आकर्षित किया जा सके।

वर्तमान समय में हिंदी भाषा में ऐसी बहुत सी पत्रिकाएँ हैं जो पर्यटन से सम्बंधित संपूर्ण जानकारियाँ देती हैं। उदाहरण के लिए प्रणाम पर्यटन, आउटलुक हिंदी पत्रिकाएँ हैं जो कि एक त्रैमासिक पत्रिका है व इसके साथ ही 'अतुल्य भारत' पत्रिका जो पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित की जाती है। इसमें अलग–अलग लेखको के लेख छपते हैं। इसके अलावा बहुत से हिंदी अखबारों में भी विशेष लेख पर्यटन पर आधारित करके लिखे जाते हैं।

आजकल हिंदी को बढ़ावा देने में सोशल मीडिया का भी काफी अहम योगदान रहा है। लोग कही भी यात्रा करने के पूर्व उस जगह के बारे में संपूर्ण जानकारियाँ इकट्ठा करना चाहते हैं और इसके लिए वो सोशल मीडिया का सहारा लेते हैं। आजकल बहुत से यू–ट्यूबर्स देश विदेश की यात्राओं पर जाकर अपनी यात्रा के विभिन्न पहलुओं को दिखाते हैं। वर्तमान में भारत में अधिकांश व्लाग व वीडियो को हिंदी में बनाया जा रहा है। जिसको देखने वालो की संख्या भी कई मिलियन में हैं। कुछ इसी प्रकार के वीडियो को फेसबुक और इंस्टाग्राम पर भी अपलोड किया जा रहा है जिससे पर्यटन उद्योग व हिंदी भाषा का काफी प्रचार–प्रसार होता है। इन सरकारी और निजी प्रयासों के कारण हिंदी भाषा के माध्यम से घरेलू पर्यटन का विकास हो रहा है और इससे देश की सांस्कृतिक विविधता और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल रहा है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारत में लोग अनंतकाल से घरेलू यात्राएँ करते आ रहे हैं। हाल के कुछ वर्षों में केंद्र व राज्य सरकारों के अथक और निरंतर प्रयासों से घरेलू पर्यटन को बहुत प्रोत्साहन मिला है। हमारी सरकारों ने न केवल भारत में आधारभूत सुविधाओं को बढ़ाने पर जोर दिया है बल्कि हिंदी भाषा में घरेलू पर्यटन के प्रचार–प्रसार पर भी ध्यान दिया है। आज बदलते समय में पर्यटकों के आवश्यकता के दृष्टिगत यात्रा के दौरान इन्हें हर जरूरी सूचनाएं हिंदी भाषा में उपलब्ध करवाई जा रही है जिसके कारण वे पर्यटक जो अंग्रेजी न जानने के कारण यात्रा करने में परहेज करते थे, वे अब हिंदी भाषा के प्रोत्साहन के कारण बढ़–चढ़कर यात्रा कर रहे हैं। इतना ही नहीं, हिंदी भाषा का व्यापक प्रयोग साइनबोर्ड, दिशा–निर्देश और सूचना पुस्तिकाओं में होने से पर्यटकों को यात्रा के दौरान किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ रहा है। इसके अलावा, हिंदी भाषा में उपलब्ध साहित्य, यात्रा वृतांत, पत्रिकाएँ और उपलब्ध ऑनलाइन सामग्री, पर्यटन स्थलों के प्रति लोगों की रुचि में बढ़ोत्तरी हो रही हैं। सरकारी और निजी प्रयासों, जैसे पर्यटन मंत्रालय की हिंदी वेबसाइट, रेलवे की हिंदी सेवाएं, हिंदी भाषा में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में यात्राओं पर निरंतर लेख लिखा जाना और हिंदी के जानकार टूर गाइड और टूर एस्कॉर्ट को पर्यटकों के समूहों के साथ यात्राओं पर भेजना। बॉलीवुड की फिल्मों में प्रमुख पर्यटक स्थलों को दिखाया जाना भी घरेलू पर्यटन को काफी प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि आज भी हिंदी भाषा, घरेलू पर्यटन के विकास में अहम भूमिका निभा रही है, जो न केवल पर्यटकों की यात्रा को सुगम एवं सुखद बना रही है, बल्कि हिंदी भाषा के माध्यम से हमारे घरेलू पर्यटन को बढ़ाते हुए देश की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में सराहनीय उपलब्धि हासिल किया जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय जनगणना, भारत सरकार (2011) जनगणना 2011, पृ 35
2. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार (2021) पर्यटन सांख्यिकी पर वार्षिक रिपोर्ट, पृ. 45
3. लुओ, जे.एम., और लैम, सी.एफ. (2018) मनोरंजन पर्यटन का परिचय, मनोरंजन पर्यटन, राउटलेज, पृ.1–8
4. विलियम्स एस. (2004) पर्यटनः सामाजिक विज्ञान में महत्वपूर्ण अवधारणाएँ,

राउटलेज, पृ. 54
5. लोकसभा सचिवालय संसद पुस्तकालय और संदर्भ, अनुसंधान, प्रलेखन और सूचना सेवा (लार्डिस) (2013), भारत में पर्यटन क्षेत्र
(संदर्भ नोट संख्या 13 अगस्त, 2013), पृ. 1
6. श्यजू, पी. जे., गिरीश, वी. जी., चटर्जी, के., और सिंह, पी. (2024) भारत में घरेलू पर्यटन वृद्धि, कोविड–19 के बादः टूर ऑपरेटरों के दृष्टिकोण, पर्यटनः एक अंतर्राष्ट्रीय अंतःविषय पत्रिका, 72(3), पृ. 456–473
7. मैंडिक, ए., मृनजावैक, जेड., और कोर्डिक, एल. (2018), पर्यटन अवसंरचना, मनोरंजक सुविधाएँ और पर्यटन विकास, पर्यटन और आतिथ्य प्रबंधन, 24(1), पृ. 41–62
8. कार्बोन, एफ. (2017) अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन और सांस्कृतिक कूटनीतिः पर्यटन के माध्यम से वैश्विक आपसी समझ और शांति के प्रति एक नया वैचारिक दृष्टिकोण। बिजनेस और कानून संकाय, मार्केटिंग और प्रबंधन स्कूल,
कोवेंट्री विश्वविद्यालय, यूके, पृ. 61–74
9. सोशल ब्लेड. (2024) शीर्ष 50 सबसे ज्यादा देखे गए चैनल, 7 जुलाई, 2024 को https://socialblade.com/youtube/top/50/mostviewed से लिया गया।
10. जाफरी, जे. (1987) घरेलू पर्यटन पर. जर्नल ऑफ ट्रैवल रिसर्च, 25(3), पृ. 3–9.।
11. कैन, एन.पी., और थान, एस.डी. (2020) घरेलू पर्यटन व्यय और आर्थिक भेद्यता, पर्यटन अनुसंधान के इतिहास, 85, 103063
12. नंजनगुड, ए., और रीजेंडर्स, एस. (2020) सिनेमाई यात्रा कार्यक्रम और पहचानः नीदरलैंड में हिंदुस्तानियों के बीच बॉलीवुड पर्यटन का अध्ययन, यूरोपियन जर्नल ऑफ कल्चरल स्टडीज, 25(2), पृष्ठ 1–17
13. राजशेखरन, आर., और कासिवैरवन, पी. (2014) तमिलनाडु पर्यटन के विशेष संदर्भ में भारतीय पर्यटन उद्योग के विकास में सरकार की भूमिका, शांलैक्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कॉमर्स, 2(3), पृ 81–99,
14. पर्यटन मंत्रालय, मंत्रालय की भूमिका और कार्य, भारत सरकार। 7 जुलाई, 2024 को https://tourism.gov.in/about-us-ministry-tourism/role-and-functions-ministry#:~:text=The%20Ministry%20of%20Tourism%2C%20is,of%20tourism%20in%20the%20country. से प्राप्त किया गया।
15. बीबीसी न्यूज (2022, 14 सितंबर), भारतीय राजनीति में 'कास्ट पॉलिटिक्स' का बदलता स्वरूप क्या है? बीबीसी समाचार हिंदी, 7 जुलाई 2024
https://www.bbc. com/hindi/india-62617204 से लिया गया।

संपर्क : *डॉ अखिलेश सिंह, सहायक प्राध्यापक, पर्यटन विभाग, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी–263135, (उत्तराखण्ड), मो. नं. – 07376651395
****डॉ अमित कुमार सिंह, सह–प्राध्यापक, पर्यटन विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक–737102, (सिक्किम), मो. नं. – 09996180804**